INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 6.865 (SJIF 2023)

मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत: भारतीय कला एवं संगीत

(Intangible Cultural Heritage of Humanity: Indian Art and Music)

श्रीमती पारूल शर्मा,[1] डॉ. मनोज कुमार यादव,[2] डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह[3]

[1]असिस्टेन्ट प्रोफसर, विवेकानंद कॉलेज आफ एजुकेशन, अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश भारत)

[2,3]एसोसिएट प्रोफसर, विवेकानंद कॉलेज आफ एजुकेशन, अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: https://doi-ds.org/doilink/12.2023-57794394/IRJHIS2312007

सारांश :

भारत एक समृद्ध विरासत का हकदार है जो अपने गौरवशाली अतीत के बारे में बताता है हमारे पूर्वजों ने सदियों से हमारी संस्कृति और स्मारकीय विरासत को सुरक्षित किया है तो हमें उस परंपरा को बनाए रखना चाहिए। हमारी विरासत हमें जड़ों से जोड़ती है और बताती है कि हम वास्तव में क्या है? भारतीय विरासत कई शताब्दी पहले की है। यह विशाल और जीवंत है। हमने अपनी संस्कृति व परंपरा को शुरू से ही महत्व दिया है और इसे अपनी आने वाली पीढ़ियो के लिए खूबसूरती से संरक्षित किया है। भारत विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं वाला देश है। यह विभिन्न धर्मो और पंथों के लोग रहते हैं। सभी के अपने रीति-रिवाज और परंपराएं हैं। प्रत्येक धार्मिक समूह द्वारा पालन की जाने वाली संस्कृति में गहरी अंतर्निहित जड़े हैं और उनमें अटूट विश्वास है। प्रत्येक धर्म के त्यौहारों, नृत्यरूपों, संगीत और अन्य विभिन्न कलारूपों का अपना आकर्षण है। हमारी संस्कृति की सुंदरता यह है कि हम न केवल अपनी विरासत के प्रति सम्मान रखते हैं बल्कि अन्य धर्मो की विरासत के प्रति भी सम्मान दिखाते हैं, यही कारण है कि सदियों से ज्वलंत भारतीय विरासत बची हुई है।

भारतीय रीति-रिवाज और परंपराएं हमें विनम्र बने रहने, दूसरों का सम्मान करने और समाज में सद्भाव से रहने के लिए प्रोत्साहित करती है। हम अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं को बहुत महत्व देते हैं। विभिन्न प्रकार के शास्त्रीय नृत्य, संगीत और पेंटिंग जैसे विभिन्न कला रूप भी हमारी विरासत का एक हिस्सा है। भरतनाट्यम, कथक, कुचिपुड़ी और ओडिसी कुछ प्रसिद्ध भारतीय नृत्य रूप हैं। कर्नाटक संगीत, ठुमरी, रविंद्रसंगीत, ओडिसी और लोक संगीत के क्षेत्र में भारत का योगदान है। मधुबनी पेंटिंग, मुगल पेंटिंग, तंजौर पेंटिंग मैसूर पेंटिंग, और पहाड़ी पेंटिंग भारत में उत्पन्न चित्रों के कुछ सुंदर रूप है। भारत का प्रत्येक स्मारक अपने अद्भुत वास्तुशिल्प के लिए जाना जाता है। ताजमहल, कुतुब मीनार लाल किला, अजंता एवं एलोरा की गुफाएं, सांची के बौद्ध स्मारक, जयपुर का हवा महल और मैसूर पैलेस हमारे देश के कुछ विरासत स्मारक है।

हमारी संस्कृति परंपरा स्मारक साहित्य और विभिन्न कलाएं हमारी विरासत का हिस्सा बनती है। इन्हें दुनिया भर में सराहा गया है । हम एक सुंदर विरासत के साथ धन्य है। हमें ऐसी जीवंत का हिस्सा होने संस्कृति वाले देश का हिस्सा होने पर गर्व है । युवा पीढ़ी को भारत की सस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने की दिशा में प्रगतिशील होना चाहिए । हम सभी को इसे संरक्षित करने के लिए अपनी जिम्मेदारी के रूप में लेना चाहिए ताकि हमारी आने वाली पीढियां को भी ऐसा ही देखने और अनुभव करने को मिले।

कुंजी शब्दः *भारतीय संस्कृति, भारतीय कला, नृत्य एंव संगीत, सांस्कृतिक विरासत*

प्रस्तावनाः

एक राष्ट्र उसकी प्राचीन और वर्तमान उपलब्धियो द्वारा जाना जाता है। प्राचीन उपलब्धियां जो समय के प्रहार से शेष रह जाती है, विरासत बन जाती है। इस प्रकार विरासत संस्कृति का वह तत्व है जो भावी पीढ़ी द्वारा सामूहिक रूप में अर्जित की जाती है। कोणार्क का सूर्य मंदिर, मिस्र के पिरामिड कुम्भ मेला अनेक धार्मिक रीति रिवाज, आस्थाएं और विश्वास जो कि हमारे दैनिक जीवन से सम्बद्ध है, हमारी विरासत के कुछ उदाहरण हैं। भारत के लोग जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपने पूर्वजों द्वारा निर्मित और छोडी गई सम्पन्न सांस्कृतिक विरासत के उतराधिकारी है। भारत की सांस्कृतिक विरासत केवल सबसे अधिक प्राचीन विरासतें में से ही एक नहीं है अपितु यह सर्वाधिक विस्तृत तथा विविधतापूर्ण विरासतें में भी एक है। भारतीय कला में हमारी बहुत सारी कलाएं शामिल हैं जिनमें भारत की चित्रकारी सभी कालों में अभिनव रही हैं। अजंता एलोरा की गुफाएं तथा उसी तर्ज पर ग्वालियर की बाघ गुफाओं की दीवारों एवं छतों पर बनी चित्रात्मक कलाएं आज भी प्रशंसनीय एवं आकर्षक है। मधुबनी (बिहार) की मधुबनी चित्रकारिता तथा उड़ीसा की पाट्टा कलाकृतियां कला कौशल तथा चित्रकारी के सुंदर उदाहरण हैं। मुगल काल में ललित कला महत्वपूर्ण उत्कर्ष के स्तर पर जा पहुंची थी। भारत मूर्ति कला और वास्तु कला के क्षेत्र में भी बहुत समृद्ध रहा है । मुगलों के माध्यम से भारतीय वास्तु कला का एक नए सोपान में प्रवेश हुआ। मुगल स्थापत्य कला में फारसी और भारतीय शैली का खूबसूरत मिश्रण स्पष्ट प्रकट होता है। ब्रिटिश शासन काल में पाश्चात्य वास्तुकला की शैलियाँ लोकप्रिय हुई और संपूर्ण देश में उनका प्रसार हुआ। मथुरा और सारनाथ के शिल्पकार समूहों ने मूर्तियों के भौतिक सौंदर्य तथा उनकी मुख मुद्राओं की प्रभाविता पर विशेष ध्यान दिया। मूर्तियां बारीकी से हर बातों को ध्यान में रखकर तरासी गई थी। भारत सर्वोत्कृष्ट हस्तशिल्प का खजाना माना जाता है। दैनिक जीवन की सामान्य वस्तुएं भी कोमल कलात्मक रूप में गढ़ी जाती है। भारत का प्रत्येक क्षेत्र अपने विशिष्ट हस्तशिल्प पर गर्व कर सकता है उदाहरणार्थ- कश्मीर की कढ़ाई वाली शालें, गलीचे, नामदार सिल्क तथा अखरोट की लकड़ी के बने फर्नीचर के लिए प्रसिद्ध है। राजस्थान वंदनी काम के वस्त्रों, कीमती हीरे जवाहरात जडें आभूषणों और मीनाकारी के काम के लिए प्रसिद्ध हैं । आंध्र प्रदेश अपने पोचमपल्ली की सिल्क साड़ियों के लिए, तमिलनाडु ताम्र मूर्तियों एवं कांजीवरम साड़ियों के लिए मैसूर रेशम तथा चंदन की लकड़ी की वस्तुओं के लिए केरल हाथी दांत नक्काशी, मध्य प्रदेश चंदेरी और कोसा सिल्क के लिए, लखनऊ चिकन, बनारस जरी वाली साड़ी आदि भारत के विशिष्ट पारम्परिक सजावटी दस्तकारी के कुछ उदाहरण हैं।

भारत समृद्ध संस्कृति तथा विरासत से संपन्न देश है। हमारी सभ्यता के आरंभ से ही संगीत हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। वैदिक मंत्रों को लै में तथा त्रुटिहीन गाने के लिए वेदों में नियम बताए गए थे। भारत संगीत को सबसे प्राचीन परंपरा को हम सामवेद में खोज सकते हैं। जिसके मंत्र संगीत प्रसिद्ध रूप

में गाए जाते हैं। हिंदुस्तानी संगीत के ज्यादातर संगीतज्ञ स्वयं को तानसेन की परंपरा का वाहक मानते हैं। ध्रुपद, ठुमरी, ख्याल टपपा, शास्त्री संगीत की अलग-अलग विधाएं हैं। कुछ अत्यंत लोकप्रिय राग हैं - बहार, भैरवी, सिंधु भैरवी, भीम पलासी, दरवारी, हंस ध्वनि, जय जयंती, मेघ मल्हार और तोड़ी आदि। इसी प्रकार बाद्य संगीत की बहुत विधाएं हैं इनमें सितार, सरोद, संतूर, सारंगी जैसे प्रसिद्ध वाद्य यंत्र हैं। भारतीय कला एवं संगीत का महत्व वैश्विक स्तर पर बढ़ा है । राष्ट्रीय एकता व अखंडता को बनाए रखने में कला संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है । किसी भी राष्ट्र की विविधता मूर्त और अमूर्त उसकी कला संस्कृति में परिलक्षित होती हैं। इन कला विधाओं से संबंधता मनुष्य को एक श्रेष्ठतम इंसान बनाती है, क्योंकि ये कला विधाएं मानव आत्मा को उदात्त बनाती हैं और एक आनंददायक वातावरण का निर्माण करती हैं। इन कलाओं का ज्ञान व अभ्यास व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करता है। परंतु यह कलाकार की निष्ठा व समर्पण पर निर्भर करता है। इन कलाओं में संलग्न व्यक्ति आत्म संतुलन आत्म शांति, आत्म नियंत्रण, और दूसरों के लिए स्वंय में प्रेम का भाव प्राप्त करता है। उनका कला प्रदर्शन उन्हें आत्मविश्वासी, आत्म नियंत्रित और स्वयं को परिस्थितियों के अनुकूल ढाल लेने वाला बनाता है। उनमें नकारात्मक भावनाएं लुप्त हो जाती हैं क्योंकि नृत्य संगीत नाटक का मूल मन्त्र हमें दूसरों से प्रेम करने की शिक्षा देता है।

अमूर्त सांस्कृतिक विरासतः

अमूर्त संास्कृतिक विरासत किसी समुदाय या राष्ट्र की वह निधि है जो सदियों से उस सामुदाय या राष्ट्र के अवचेतन को अभिभूत करते हुए निरंतर समृद्ध होती रहती है। विरासत सिर्फ स्मारकों या कला वस्तुओं के संग्रहण तक ही सीमित नहीं होता है इसमें उन परंपराओं एवं प्रभावी सोचो को भी शामिल किया जाता है जो पूर्वजों से प्राप्त होते हैं और हमसे फिर अगली पीढ़ी को प्राप्त होते हैं जैसे मौखिक रूप से चल रही परंपराएं, कला प्रदर्शन, धार्मिक एवं सांस्कृतिक उत्सव और परंपरागत शिल्प कला । यह अमूर्त सांस्कृतिक विरासत अपने प्रकृति के अनुरूप क्षणभंगुर है और इसे संरक्षण करने के साथसाथ समझने की भी आवश्यकता है क्योंकि वैश्वीकरण के इस दौर में सांस्कृतिक विविधताओं को अक्षुण रखना एक महत्वपूर्ण कारक है। अमूर्त सांस्कृतिक समय के साथ अपनी-अपनी समकालीन पीढियों की विशेषताओं को अपने में आत्मसात करते हुए मौजूदा पीढ़ी के लिए विरासत के रूप में उपलब्ध होती है। यह समाज की मानसिक चेतना का प्रतिबिम्ब है जो कला, क्रिया या किसी अन्य रूप में अभिव्यक्त होती है। उदाहरण स्वरूप योग इसी अभिव्यक्ति का एक रूप है। भारत में योग एक दर्शन भी है और जीवन पद्धति भी।

भारतीय कला का समृद्ध इतिहासः

भारतीय परंपरा सबसे पुरातन परंपराओं में से एक है। यह दुनिया के सांस्कृतिक प्रतीकों का उद्गम स्थल भी है। भारत ने अपनी मिश्रित संस्कृति, प्राचीन सभ्यता और समृद्ध कला के माध्यम से दुनिया को समय-समय पर राह दिखाने का काम किया है। भारतीय कला भारतवर्ष के विचार, धर्म, तत्व ज्ञान और संस्कृति का दर्पण है। कला संस्कृति की वाहक होती है। कला संस्कृति की सुंदरतम अनुभूति है जो संस्कृति जितनी उदार होती है, उसकी कला में उतना ही सूक्ष्म सौंदर्य सहज साकार होता है। भारत में सभी प्रकार की कला और कलाकारों को समय-समय पर संरक्षण मिलता रहा है। उदारता की दृष्टि से भारतीय कला और संस्कृति विश्व में श्रेष्ठ है। कला अपने आप में एक दर्शन है। कला मनुष्य के वाहय और आंतरिक संसार के प्रभाव की प्रतिक्रिया है। कला के दृश्य का प्रस्फुटन हृदय में होता है। इसलिए कला आत्मा की अभिव्यक्ति भी

है। ज्योतिष जोशी लिखते हैं कि "कला की कल्पना और कलाकार की मनोभावों की अभिव्यक्ति बनाकर स्वच्छन्दतावाद ने जहां पारंपरिक परिपाटियों को ध्वस्त किया, वहीं यथार्थवाद ने जीवन को यथार्थ से जोड़ा और उसे महज मनोरंजन मानने से इनकार किया। भारतीय दर्शन में कला को 'सत्यं शिवम सुंदरम' के रूप में माना गया है। रविंद्र नाथ ठाकुर कहते हैं कि "जो सत्य है, जो सुंदर है, जो कल्याणकारी है, वही कला है।

भारतीय कला संस्कृति का विश्व विरासत में एक विशेष स्थान है। यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में भारत का छठा स्थान है। राष्ट्र के विकास में कला की अहम भूमिका होती है। कला को मानव जीवन से पृथक करके नहीं देखा जाना चाहिए। भारत में कला के विभिन्न रंग रूप है। भारत में गीत, संगीत, नृत्य, नाटक कला, लोक परंपराएं, कला प्रदर्शन, धार्मिक संस्कारों एवं अनुष्ठानों, चित्रकारी एवं लेखन के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा संग्रह मौजूद है, जो मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में जाना जाता है। कला मानव निर्मित है और मानव की निर्मिति को रमेश को मानव के संपूर्ण जीवन से कैसे पृथक किया जा सकता है। मानव की कला ज्ञान, व्यवहार व किसी को मानव के जीवन से ही अर्थ प्राप्त होता है। भारतीय कला का विकास कई चरणों में संपन्न हुआ-

प्रारंभिक भारतीय कलाः

चट्टान कला- पुरातत्वविदों को भारत में प्रागैतिहासिक रॉक कला के साक्ष्य मिले हैं। यह एक प्रारंभिक कला थी, जिसमें गुफा चट्टानों पर नक्काशी या चित्र शामिल थे। सबसे पुराने उदाहरण मध्य भारत में पाए गए। भीमवेटका, पेट्रोग्लिफ है और माना जाता है कि यह कम से कम 290000 वर्ष पुराने हैं। जानवरों और मनुष्यों का प्रतिनिधित्व करने वाली गुफा चित्रों के रूप में रॉककला का निर्माण जारी रहा। इन चित्रों का सबसे पुराना उदाहरण लगभग 7000 ईसा पूर्व का है।

सिंधु घाटी कला- दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से सिंधु घाटी सभ्यता देश की उत्तर पश्चिम क्षेत्र में जो आज का पाकिस्तान है , फली-फुली। एक परिष्कृत एवं सभ्य संस्कृति की ओर विकास हड़प्पा काल से हुआ। इस काल की कलात्मक अभिव्यक्ति का पता शैल चित्रों और मंदिर कलाओं से लगाया जा सकता है। इस सभ्यता की लोगों ने 2500 और 1800 ईसा पर्व के बीच सबसे पहले ज्ञात भारतीय कला मूर्तियों का निर्माण किया।

बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म ने कला को प्रभावित किया- छठी शताब्दी में बौद्ध धर्म के कलाकारों ने पत्थर और कांस्यं सहित मूर्तियां बनाई। उन्होंने भारतीय गुफा कला के शानदार नमूने भी पेश किये जिसमें पूरे मंदिरों को पत्थर पर उकेरा गया था । पांचवीं शताब्दी ईस्वी तक मूर्ति कला भारतीय बौद्धों और हिंदुओं के बीच एक आम प्रथा थी। हिंदू धर्म सदियों तक कला निर्माण, शिव और अन्य देवताओं की मूर्तियां और उत्तरी भारत में 11वीं शताब्दी में निमित्त कन्दरिया महादेव मंदिर जैसे विशाल पत्थर के मंदिरों का केंद्र बना रहा।

इस्लामी कला- 12वीं शताब्दी में भारत में धीरे-धीरे मुस्लिम विजय हुई और उस दौरान विभिन्न इस्लामी राज्यों की स्थापना हुई। भारत में सोलहवीं शताब्दी में स्थापित मुगल साम्राज्य के तहत इस्लाम धर्म को धीरे-धीरे महत्व मिला। इस्लामी संस्कृति का सुंदर प्रभाव मुगलों और इस्लामी शासको के आक्रमण के साथ-साथ आया 16वीं सदी से लेकर 19वीं सदी के मध्य तक मुगलों के शासन ने देश का पूरा स्वरूप बदल दिया। उनके प्रभाव का पता उनके द्वारा निर्मित वास्तु कला और स्मारकों जैसे ताजमहल, कुतुब मीनार से

लगाया जा सकता है।

औपनिवेशिक युग- 18 वीं शताब्दी में मराठा शासन के पतन के साथ ही यूरोपीय देश विभिन्न क्षेत्रों से भारत में प्रवेश करने लगे। टीपू सुल्तान की हार के साथ ब्रिटिश शक्ति का विस्तार हुआ और 19वीं शताब्दी के मध्य तक देश ने खुद को ब्रिटिश शासन के अधीन पाया। उसे दौरान भारत पर पश्चिमी और यूरोपीय प्रभाव कुछ ऐसा था, जिसे आज भी भारतीय संस्कृति और कला में अनुभव किया जा सकता है।

स्वतंत्रता युग- दशकों के ब्रिटिश शासन के बाद 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। भीषण विश्व युद्धों, आक्रमण, उत्पीड़न, संघर्ष, स्वतंत्रता और संस्कृति के विकास के साथ देश संघर्ष के एक लंबे दौर से गुजरा और इन पहलुओं ने भारतीय कला और संस्कृति के इतिहास को बहुत हद तक प्रभावित किया है।

भारतीय चित्रकला की शैलियांः

भारतीय कला की प्रत्येक शैली अपने तरीके से अनूठी और अत्यधिक सराहनीय है। परंपरागत रूप से यह कला शैलियों केवल दीवार चित्रों या भित्ती चित्रों में ही मौजूद थी लेकिन आज वे कैनवस, कागज, कपड़े आदि में भी पाए जाते हैं। यहां विभिन्न भारतीय कला शैलियों की एक सूची दी गई है जिनमें से कुछ अभी भी प्रचलन में है-

मधुबनी चित्रकला- इस कला को मिथिला कला के नाम से भी जाना जाता है और इसकी उत्पत्ति नेपाल में और वर्तमान के बिहार में हुई थी। ज्यादातर महिलाओं द्वारा प्रचलित यह पेंटिंग या दीवार भित्ती चित्र, देवताओं, जीवों और वनस्पतियों को दर्शाते हैं। कला के इस रूप को परंपराओं और संस्कृतियों के विचारोत्तेजक चित्रण के लिए बहुत सराहा जाता है।

वर्ली पेंटिंग- कला का यह रूप 2500 ईसा पूर्व का है और इसका अभ्यास महाराष्ट्र के थाणे और नासिक की वर्ली जनजातियों द्वारा किया जाता था। यह चित्र अधिकतर जनजाति की प्रकृति और सामाजिक रीति-रिवाज को दर्शाते है। यह कला खेती, प्रार्थना, नृत्य, शिकार आदि जैसी दैनिक गतिविधियों को चित्रित करती है । यह पेंटिंग आमतौर पर विवाहित महिलाओं द्वारा शादी का जश्न मनाने के लिए बनाई जाती थी। और उनका उपयोग वर्ली जनजातियों की झोपड़ियां को सजाने के लिए भी किया जाता था।

लघु चित्रकारीः

लघु चित्र भारतीय, इस्लामी और फारसी कला शैलियों के संयोजन को दर्शाजी हैं। यह कला रूप् 16वीं शताब्दी का है और विषय आमतौर पर लडाई, अदालत के दृश्य चित्र, वन्य जीवन, स्वागत समारोह, शिकार के दृश्य, पौराणिक कहानियाँ आदि पर केन्द्रित होते हैं।

कलमकारी चित्रकारी - फारसी रूपांकनों से गहरा संबंध रखने वाली यह कला 3000 से अधिक वर्षों से प्रचलन में है । कलमकारी का नाम कलम से किया गया है और इसका अर्थ है, कलम से चित्र बनाना। हाथ और ब्लॉक प्रिंटिंग की यह जैविक कला आंध्र प्रदेश में पीढ़ियो से जीवित है इसमें हरा, नीला, पीला और काला जैसे मिट्टी के रंग शामिल हैं।

तंजौर पेंटिंग- पहली बार 16वीं शताब्दी में चोल शासन के तहत चित्रित इस पेंटिंग की उत्पत्ति तमिलनाडु के तंजौर जिले में हुई थी । यह मुख्य रूप से हिंदू देवी देवताओं पर केंद्रित है। यह पेंटिंग लकड़ी के तख्तों पर बनाई जाती है। इस चित्रकला की शैली दक्किनी और मराठा काल के साथ-साथ यूरोपीय शैलियों के समान है।

मंजूषा चित्रकला- यह मुख्यतः बिहार के भागलपुर की चित्रकला है। यह बांस या लकड़ी के बने मंजूषा (बक्सा) पर यह चित्रकारी की जाती है। इसके तहत सर्प, हिंदू देवी देवता, भगवान शिव एवं उनकी पुत्रियों को मुख्य स्थान दिया जाता है। इसमें स्वदेशी तरीके से तैयार रंगों का प्रयोग किया जाता है। यह चित्रकारी स्त्री और पुरुष दोनों ही करते हैं।

कालीघाट चित्रकला- यह कोलकाता के समीपवर्ती गांव के स्थानीय कलाकारों द्वारा विकसित हुई। इन गांवों में कुछ स्थानीय कलाकार होते थे जिन्हें खर्रा या पटुआ चित्रकार कहा जाता था । इसके तहत हिंदू पौराणिक कथाओं, रोजमर्रा के सामाजिक विषय, पशु-पक्षी, त्यौहार आदि के विषयों का चित्रण किया जाता है।

भारतीय संगीतः

प्रागैतिहासिक काल से ही भारत में संगीत की समृद्ध परम्परा रही है। माना जाता है कि संगीत का प्रारम्भ सिन्धुघाटी की सभ्यता के काल में हुआ। इसके साक्ष्य उस समय की खुदाई से प्राप्त अवशेष है। सिन्धुघाटी की सभ्यता के पतन के पश्चात वैदिक संगीत का प्रारम्भ हुआ जिसमें संगीत की शैली ने भजनों और मंत्रों के उच्चारण से ईश्वर की पूजा और अर्चना की जाती थी। भारत में सांस्कृतिक काल से लेकर आधुनिक युग तक आतेआते संगीत की शैली और पद्धति में जबरदस्त परिवर्तन हुआ। भारतीय संगीत में यह माना गया है कि संगीत के आदि प्रेरक शिव और सरस्वती हैं। इसका तात्पर्य यही जान पड़ता है कि मानव इतनी उच्च कला को बिना किसी दैवी प्रेरणा के केवल अपने बल पर विकसित नहीं कर सकता।

संक्षिप्त परिचय- वैदिक युग में 'संगीत' समाज में स्थान बना चुका था। सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में आर्य के आमोद-प्रमोद का मुख्य साधन संगीत को बताया गया। अनेक यंत्रों का आविष्कार भी ऋग्वेद के समय बताया जाता है। फिर सामवेद आया, जिसे संगीत का मूल ग्रंथ माना गया। सामवेद में उच्चारण की दृष्टि से तीन और संगीत की दृष्टि से सात प्रकार के स्वरों का उल्लेख है।

उत्तर वैदिक काल के रामायण ग्रंथ में दुदुम्भी, वीणा, मृदंग और घड़ा आदि बाहरी यंत्रों व भंवरों के गाने का वर्णन मिलता है। महाभारत में कृष्ण की बांसुरी के जादुई प्रभाव से सभी प्रभावित होते हैं। अज्ञातवास के दौरान अर्जुन ने उत्तरा को संगीत नृत्य सिखाने हेतु वृहन्नला का रूप धारण किया।

चौथी शताब्दी में भरत मुनि ने नाट्य शास्त्र के छः अध्यायों में संगीत पर चर्चा की है। इनमें विभिन्न वाद्यों का वर्णन, उनकी उत्पत्ति, उन्हें बजाने के तरीकों, स्वर के बारे में विस्तार से लिखा गया है। इस ग्रंथ में भरत मुनि ने गायकों और बादकों के गुणों पर भी खुलकर लिखा है। बाद में 6 राग- भैरव, हिण्डौल, कैसिक, दीपक, श्रीराग और मेघ प्रचार में आए। पांचवीं शताब्दी में पाणिनि और अष्टाध्याई में भी अनेक पदों जैसे मृदंग, झर-झर, हुड़क तथा गायको व नर्तकों संबंधी कई बातों का उल्लेख है। सातवीं व आठवीं शताब्दी के 'नारदीय शिक्षा' और 'संगीत मकरंद' की रचना हुई। 11वीं शताब्दी में मुसलमान अपने साथ फारस का संगीत लाए। इस दौर के राजा भी संगीत प्रेमी थे। और दूसरे संगीतज्ञों को आश्रय देकर उनकी कला को निखारने का कार्य करते थे। बादशाह अकबर के दरबार में 36 संगीतज्ञ थे जिनमें तानसेन, बैजू बावरा, रामदास, तानरंग खाँ के नाम चर्चित हैं। जहांगीर के दरबार में खुर्रम्दास, मक्कू, छत्तरखान और विलासखान नामक संगीतज्ञ थे। इसी शताब्दी में संगीत की खास शैली ध्रुपद शैली ेे का विकास हुआ। और बारहवीं शताब्दी में संगीतज्ञ जयदेव ने गीत गोविंद की रचना। 13वीं शताब्दी में पंडित सारंग देव ने संगीत रत्नाकर की रचना की। 14वीं शताब्दी में विद्यारण्य ने संगीतसार की, 15वीं शताब्दी में राजतरंगणी, 16वीं शताब्दी में सद्रांगचंद्रोदय, स्वरमेल कलानिधि,

17वीं शताब्दी में हृदयप्रकाश, हृदय संगीत दर्पण, अनूप संगीत रत्नाकर, 18वीं में शताब्दी में श्रीनिवास द्वारा रचित संगीतसारामृतम व राग लक्ष्मण ग्रंथों की रचना हुई।

भारतीय संगीत के प्रकार -भारतीय संगीत के विभिन्न रूप इस प्रकार हैं-

1. **शास्त्रीय संगीत**-संगीत का नाम लेते ही शास्त्रीय संगीत ही ध्यान में आता है। शास्त्रीय संगीत का भाव है शास्त्र कारिता संगीत। शास्त्रीय संगीत को समझने के लिए शास्त्र को समझना अनिवार्य है। शास्त्रीय संगीत वह संगीत है, जो शास्त्रों व नियमों के अनुसार है, अर्थात जो संगीत स्वर लय, ताल आदि नियमों में बांधकर आकर्षक रीति से गाया और बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में स्वर लय एंव ताल वद्ध का होना राग के अनुकूल स्वरों का लगना, गाने बजाने में क्रम होना, अलाप, तान, बोल, सरगम आदि की तैयारी आदि नियमों का पालन करना अनिवार्य होता है।
2. **लोक संगीत** -लोक संगीत एक व्यापक परिवार है, जिसकी अनंत शाखाएं संपूर्ण संसार के विभिन्न देशों की ग्रामीण जातियों की वाणी में व्याप्त है । लोक संगीत का अर्थ जनसाधारण विशेषतया ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित संगीत से है। इस संगीत के नियम अखिल व सर्वमान्य है। इसके अंतर्गत शादी के गीत, वर्षा के गीत, विरह के गीत, लोरी, माहिया, भटियाली, माँझी आदि लोकगीत आते हैं । इसका स्वरूप सरल व कुछ स्वरों के अंदर सीमित होता है, इसलिए लोकगीतों के साथ ढोलक या कोई भी सरल वाद्य यंत्र ही बजाया जाता है। लोक संगीत लोक संस्कृति का प्रतीक होता है।
3. **उप-शास्त्रीय संगीत-** उपशास्त्रीय संगीत को अर्थशास्त्रीय संगीत भी कहा जाता है। इस संगीत के अंतर्गत की गई रचनाओं में संगीत के शास्त्रीय पक्ष का पालन नहीं किया जाता। इसके अंतर्गत ठुमरी, दादरा, चैती, कजरी आज रचनाएं आती हैं।
4. **सुगम संगीत-** आधुनिक काल में सुगम संगीत का बहुत प्रचार है। गजल, गीत कव्वाली, युगल गीत, सामूहिक गीत, भक्ति संगीत आदि रचनाओं को सुगम संगीत के अनुसार गया जाता है।

निष्कर्ष-

भारतीय संस्कृति को देव संस्कृति कहकर सम्मानित किया गया है। हमेशा से भारतीय कलाएं इसकी संस्कृति और परंपरागत प्रभावशीलता को अभिव्यक्त करने का माध्यम रही है। इसीलिए इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी कहा जाता है। हमारे गीत, संगीत, नृत्य, रंगमंच, लोक परंपरा, प्रदर्शन कलाओं, संस्कार, चित्रकला पूरे विश्व में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में जानी जाती है।

रविंद्र नाथ ठाकुर जी ने कहा है कि **"कला में मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है"** वहीं प्लेटो ने भी कहा है कि **"कला सत्य की अनुकृति है"।**

कलाएं मानव जीवन को रसीला बनती है। तथा कला के द्वारा ही जीवन दायिनी ऊर्जा का संचार होता है, जो मानव जीवन को सकारात्मक दिशा देती है, तथा तनावमुक्त रहने में सहायक होती है। कला सीमाओं में रहकर असीम होती है और यह उनकी चमत्कार पूर्ण विशेषता है। संगीत ऐसी भाव प्रधान कला है जिसकी यह विशेषता मानवेतर प्राणियों को ही नहीं अपितु प्रकृति के तत्वों तक को अपने प्रभाव का क्षेत्र बना लेती है। देश को जोड़ने में कला एवं संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका है। अमूर्त सांस्कृतिक विरासतें अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच पुल का निर्माण करती है। वह निरंतरता प्रदान करती है तथा समाज की संरचना को प्रभावित करती हैं। अतः जो भी हमारी सांस्कृतिक विरासते हैं उन्हें हमें संभाल कर रखना चाहिए तथा उनके संरक्षण के लिए कदम उठाने चाहिए।

संदर्भः

1. गुप्ता, एस. पी. और अस्थाना 2007 भारतीय कला के तत्व।
2. गुप्ता, एस. पी. और शास्त्री इंडो कैनेडियन इंस्टीट्यूट 2011 भारतीय कला की जड़े।
3. पंडित, जगदीश नारायण पाठक 'संगीत निबंध माला'।
4. आर्य, सूर्यमणि त्रिपाठी 'संगीत पत्रिका' 'मानव कल्याण में संगीत की भूमिका'।
5. सिंह, ठाकुर जयदेव 'भारतीय संगीत का इतिहास' संगीत रिसर्च अकेडमी, कोलकाता (1994) ।
6. तिवारी, अजय प्रताप 'भारतीय कला का समृद्ध इतिहास'।